महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या -

शास्त्री प्रथम खण्ड
अभिवार्द्ध द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

जयद्रथ-वध

" अधिकार खोकर बैठ रहना यह महादुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है ।।
इस तथ्य पर ही कौरवों से पाण्डवों का युद्ध हुआ।
जो भव्य भारतवर्ष का कल्पान्त का कारण हुआ।।"

उत्तर :-

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक जयद्रथ-वध खण्ड काव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि महाभारत युद्ध के होने के कारण क्या थे? कवि का कहना है कि संसार का सबसे बुरा कर्म अपने अधिकार का उपयोग न करना है। परन्तु जब अधिकार करने का उद्योग किया जाता है तो निश्चय रूप से कुल बंधु-बांधवों का भी वध कर देना पड़ता है। महाभारत युद्ध होने का मूल कारण यही है।

व्याख्या - उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि मनुष्य को अपना अधिकार खोकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना सबसे बुरा काम है। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए यदि अपने बन्धुओं को भी दण्ड देना पड़ जाये तो इस कर्म को धर्म समझ कर अवश्य करना चाहिए। यह कभी भी अधर्म की श्रेणी में नहीं आता है। कौरव और पांडवों में न्याय की रक्षा के निमित्त ही यह युद्ध हुआ। इसमें कहीं कोई सन्देह नहीं है। महाभारत के युद्ध के कारण ही भारतवर्ष के कल्प का अन्त हुआ।

विशेष :- राष्ट्रवादी कवि मैथिली शरण गुप्त जी का स्पष्ट मानना है कि मानव को अपना अधिकार कभी भी खोना नहीं चाहिए; क्योंकि यह एक

शेष आगे

महा पाप है। सत्य और न्याय की रक्षा करने के मार्ग में यदि अपना प्रिय पात्र भी सामने खड़ा हो तो सदैव मानव को सत्य के साथ खड़ा रहना चाहिए। ऐसा करने से समाज में एक सकारात्मक सन्देश जाता है। साथ ही-साथ सामान्य लोगों का विश्वास भी न्याय के प्रति बढ़ता है। अतः मनुष्य को विषम से विषम परिस्थिति में भी अधर्म, असत्य और अन्याय का साथ नहीं देना चाहिए।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
03/12/20

निबंध माला
लेखक :- आशा किशोर एवं सुरेन्द्र शर्मा
शीर्षक :- गाँधी जी और मैं
लेखक :- पंडित रामनन्दन मिश्र
शास्त्री द्वितीय खण्ड, अनिवार्य-पत्र- राष्ट्रभाषा हिन्दी
लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :-

1. प्रश्न :- गाँधी जी सन् 1926 में दरभंगा क्यों आये थे?

उत्तर :- निबन्धकार पंडित रामनन्दन मिश्र जी अपने संस्मरणात्मक निबंध में सन् 1926 की चर्चा करते हुए कहते हैं कि स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रम में जन-जागरण अभियान के तहत गाँधी जी दरभंगा आये थे। इन्होंने यहाँ पर एक महिला सभा को संबोधित किया था।

2. प्रश्न :- गाँधी जी ने दरभंगा में आयोजित सभा में किस प्रथा का विरोध किया था?

उत्तर :- श्री मिश्र जी अपने निबंध में गाँधी जी द्वारा महिला परदा-प्रथा का कड़ा विरोध किया गया था, इसका विस्तार से वर्णन करते हैं। सभा की समाप्ति के उपरांत वहाँ उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों से कहा कि महिला परदा-प्रथा का आप सब लोग मिलकर विरोध करें। महिला शक्ति को समझने का प्रयास करें। यदि महिलाओं के बीच परदा-प्रथा का प्रचलन बन्द नहीं हुआ तो हमारा आन्दोलन सफल नहीं होगा। इसलिए गाँधी जी द्वारा दरभंगा की सभा में महिला परदा-प्रथा का विरोध किया गया था।

3. प्रश्न :- लेखक गाँधी जी की यात्रा के सम्बन्ध में क्या कहते हैं?

उत्तर :- निबन्धकार अपने निबन्ध में गाँधी जी की यात्रा के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन करते हैं।

शेष आगे —

लेखक महोदय लिखते हैं कि गाँधी जी अक्सर रेल के तिसरे डब्बे में यात्रा करते थे। मैं भी उनके साथ रहता था। गाँधी जी के लिए एक डिब्बा सुरक्षित रहता था। प्रत्येक स्टेशन पर चन्दा वसूली होती थी। पूर्व से ही गाँधी जी के समर्थकों को यह जानकारी प्राप्त हो जाती थी। इसलिए रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ एकत्र हो जाती थी। स्टेशन पर गाड़ी रुकने पर अपना हाथ बाहर निकाल देते थे और लोग दिल खोलकर उन्हें दान देते थे। चन्दा में प्राप्त समस्त राशि 'हरिजन सेवक संघ' को भेज दिया जाता था। इस प्रकार लेखक महोदय ने गाँधी जी के यात्रा के सम्बन्ध मे उल्लेखनीय वर्णन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 03/12/20
एसो० प्रो०, हिन्दी
रा०कृ० सं०महाविद्यालय० सुरखसेना, पूर्णियाँ